हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-५ अङ्क-८ जनवरी, २००९

सम्पादकीय

२००८ का अन्त और २००९ का आरम्भ

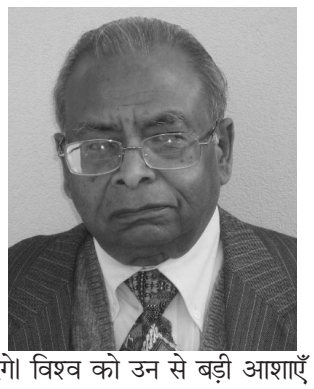

वर्ष २००८ में भारत और भारतीयों ने कुछ मामलों में अच्छी प्रगति की। विश्वनाथ आनंद ने विश्व में सर्वोत्तम शतरंज खिलाड़ी का स्थान प्राप्त किया। अभिनव बिन्द्रा ने निशाने बाज़ी में चीन के ओलम्बिक खेलों में स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। भारत व ऑस्ट्रेलिया के नागरिक, अरविंद अडिगा को उनकी पुस्तक 'व्हाइट टाइगर' के लिये बुकर पुरस्कार मिला। भारत ने पहली बार चन्द्रयान प्रक्षेपित किया। परन्तु २००८ का अन्त होते-होते, मुम्बई में हुए आतंकवादी हमलों ने, देश की सुरक्षा की नींव हिला डाली और भारत-पाकिस्तान के सम्बन्धों में गहरी दरार डाल दी। विश्व में, कई स्थानों पर घोषित तथा अघोषित युद्ध जारी रहे। मध्य-पूर्व, योरप तथा अफ़्रीका के विभिन्न भागों से हिंसात्मक घटनाओं के समाचार मिलते रहे। २००९ के आरम्भ में, मध्य-पूर्व की स्थिति और अधिक गम्भीर हो गई और वहाँ संयुक्त राष्ट्र-संघ के भवन व इमारतें सुरक्षित न रहीं।

२००८ के अन्त होने के पहले, अमेरिका में बराक़ ओबामा नये राष्ट्रपति के पद के लिये चुने गये थे। इस महीने, २० जनवरी को वे अपना पद ग्रहण करेंगे। विश्व को उन से बड़ी आशाएँ हैं। इस समय, अमेरिका तथा सम्पूर्ण विश्व आर्थिक संकट से गुज़र रहा है। बेकार लोगों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि होने की आशंका है। कई बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ बन्द हो गई हैं और कई के बन्द हो जाने की आशंका है। परन्तु विश्व के सामने आर्थिक संकट के अतिरिक्त आतंकवाद, भूमण्डलीय ऊष्मीकरण तथा जलवायु-परिवर्तन जैसी अनेक गम्भीर समस्याएँ हैं। इन सभी समस्याओं का समाधान एक व्यक्ति की पहुँच से बाहर है परंतु अमेरिका का नया राष्ट्रपति उचित मार्गदर्शन व सही नेतृत्व अवश्य प्रदान कर सकता है।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में नये-वर्ष से सम्बन्धित कविताएँ हैं, वी०सी०ई० हिन्दी परीक्षाओं और ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी पढ़ने के अनुभवों के बारे में दो लेख हैं, कहानी 'जूली की क्रिसमस-कामना' का दूसरा भाग है। साथ में सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

नव-वर्ष का स्वागत

-रचना श्रीवास्तव,डल्लास, अमेरिका

२००८ क्या ले गया, क्या दे गया
एक आँख में हँसी, एक में नमी दे गया
उपलब्धियों के उजाले मिले बहुत
अपने भी हमारे दमके बहुत
ओलम्पिक के इतिहास में
चमका एक सितारा
रिकार्ड के पन्नों में
लिख गया नाम हमारा
अभिनव जो सोने का तमग़ा जीत गया
सपना जो कल था, वह सच हो गया
२००८ क्या ले गया, क्या दे गया....।

टाटा ने किया कुछ यूँ व्यापार
बना ही डाली लखटकिया कार
जो चाहा, वह कर दिखाया
कब मानी उन्होंने हार
ख़रीद लीं जो विदेशी कम्पनियाँ
तो मान हमारा भी बढ़ गया
२००८ क्या ले गया, क्या दे गया....।

उड़ान भरी तो कुछ यूँ हम ने
कि चाँद पर तिरंगा लहरा दिया
सफलता के मोती उज्जवल
धरती से शशि तक बिखरा दिया
हुआ चंद्रयान का सफल परीक्षण
भारत विश्व-मंच पर छा गया
२००८ क्या ले गया, क्या दे गया....।

सुख की सुनहरी धूप में
ग़म के बादल भी चले
कुछ मिले तो कुछ हमको छोड़ चले
समय का शिकंजा कुछ यूँ कसा
बी०आर०चोपड़ा, अशोक मान,मन्ना डे,
हेमंत करकरे, इस्मत सिंह
और बाबा आमटे
का साथ हम से छीन ले गया
२००८ क्या ले गया, क्या दे गया....।

मुम्बई, गुजरात, अहमदाबाद के
धमाकों से
ख़ुशियाँ अचानक रो पड़ीं
मानवता घायल हुई,
इंसानियत बिलख पड़ी
पिता के कंधे पर बेटे की अर्थी
बेटे के कंधे पर जनाज़ा बाप का
इस से भारी बोझ हो सकता नहीं
और किसी बात का
यह क्रूर कृत्य
घर-घर अंधियारा कर गया
२००८ क्या ले गया, क्या दे गया....।

मुम्बई पर आक्रमण
भारतीयों पर कुठाराघात है
सोचना है कि क्या
आतंकियों ने दे दी हमें मात है
कई सिपाही, कई जवान
इस में शहीद हो गए
ममता मरी, सुहाग उजड़े,
बच्चे अनाथ हो गए
रोया देश कुछ ऐसे कि
दर्द का बादल चहुँ ओर छा गया
२००८ क्या ले गया, क्या दे गया....।

कुछ ग़म के, कुछ हर्ष के पल दे,
यह वर्ष बीतने को है
उम्मीद का नया आदित्य
उदय होने को है
जो हुआ, वह फिर न होने देंगे
स्वयं पर यह विश्वास करें
और गत वर्ष से ले सीख
नव-वर्ष का स्वागत करें।

काव्य-कुंज

नव-वर्ष आ गया है

-शकुन्तला अग्रवाल, मेल्बर्न

हर वर्ष की तरह इस बार भी
नया साल आ गया है।
मानो जीवन की पुस्तक के पुराने पन्ने
फड़फड़ा गया है।
यह जीवन एक पुस्तक ही तो है
जिसमें हर नया साल,
एक क्षेपक जोड़ देता है
और लपक कर आगे बढ़ जाता है।
केवल समय का चक्र ही
घूमता रह जाता है।

जीवन पुस्तक के पन्नों को
पीछे पलटते-पलटते,
अतीत से बचपन आ कर
आँखों में तैर जाता है।
जब मैं दादी माँ की गोद में
कहानियाँ सुनते-सुनते सो जाती थी,
और दादा जी पड़ोस के
बुज़ुर्गों के साथ बाहर चबूतरे पर,
हुक्का गुड़गुड़ाते,
पूरी शामें बतियाने में गुज़ारते थे,
और शाम का भोजन भी
ठंड़ी बयार व तारों की छाँव में
सब बूढ़े मिल कर
साथ-साथ सपोटते थे,
बच्चे दौड़ दौड़ कर
खाना-पानी घर से ला-ला कर देते थे।

कुछ आगे के पन्नों पर
स्कूल व कॉलेज की मित्र, सहेलियाँ
स्मृति के बगीचे में
ठिठोलियाँ करने लगीं,
कुछ अपनी कहने लगीं
और मेरी सुनने लगीं,
न जाने कब वह बीत गया
कुछ याद नहीं आता है।

अब मैं ख़ुद ही दादी-नानी के
पड़ाव पर आ पहुँची हूँ,
न जाने हर बार
इस नये साल ने आते आते,
वर्षों के कितने अंतराल पाटे हैं,
जीवन के कितने पड़ाव सुख-दुख के,
हम संग बाँटे हैं।

जीवन का रूप रंग बदला,
समाज का ढंग बदला,
अब चौपालों या गलियारों में
जाने का समय नहीं है,
समय बीतता बंद कमरों में
बिजली के उपकरणों के बटन दबाते
सभी बड़े और बच्चे,
संवाद-हीनता जीवन में पसर गई है।

अवसर नहीं किसी के पास
किसी से बतियाने का,
भला हो मोबाइल का
जिसने हर सम्पर्क को थाम लिया है,
ये आँख भी है और कान भी है,
सच बोलूँ तो भगवान यही है,
चाहे कोई कामकाजी हो या निठल्ला,
विद्यार्थी हो या पुजारी या मुल्ला,
जेब में सबकी है
मोबाइल का मोबल्ला
वक्त बेवक्त जो मचाता है हल्ला,
पर साल दर साल समय ने
दूरियाँ देशों की मिटा दी है,
भारत की पत्नी और माँ,
दादा, दादी भी अब विदेश आते हैं,
और नव वर्ष की ख़ुशियों का
हिस्सा बन जाते हैं।

यही नहीं प्रकृति ने भी कभी
सुन्दर सजीले रूप से लुभाया,
तो कभी बाढ़ सुनामी और
भूकंप का रौद्र रूप दिखलाया,
और शायद हर बार नया साल
कान में यह कहने आया,
जो बीत गया पीछे छोड़ो
मानव को मानव से जोड़ो,
मन के प्याले में
ममता की मदिरा भरकर
बाँटो, बाँटो, मत काटो छाँटो,
सुन्दरता को टाँको,
तो स्वर्ग धरा पर है,
नव वर्ष यह दोहराने आ गया है,
हर वर्ष की तरह इस बार भी
नया साल आ गया है।
अलविदा २००८ को कहने
२००९ आ गया है।

वर्ष २००८ की वी०सी०ई० हिन्दी परीक्षा के परिणाम

(सन् २००८ की १२वीं कक्षा की हिन्दी परीक्षा में ३२ विद्यार्थी विक्टोरिया से, ३३ विद्यार्थी न्यू साउथ वेल्स से और २ विद्यार्थी तस्मानिया से बैठे। इस वर्ष वी०सी०ई० हिन्दी परीक्षा में पहली बार किसी विद्यार्थी को ५० में से ४९ अंक प्राप्त हुए हैं। सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली विद्यार्थी हैं- जानकी धवल त्रिवेदी। *४० से अधिक अंक प्राप्त करने वाले पाँच अन्य विद्यार्थी हैं-* मेहुल श्रीवास्तव (४६), साक्षी सिंह (४५), मृनाल चव्हाण (४४), शिंजिनी ऐलावादी (४१) और यामिनी पंत (४०)।

इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले अन्य सफल विद्यार्थियों के नाम हैं -

कृतिका प्रकाश भाटिया, खुशबू क्षेत्री, सुरुचि गुप्ता, नूपुर कँवर, अनिल कुल, विश्वाल सुरेशभाई पटेल, किरणप्रीत कौर राठौर, पूनम रतोडी, ऊषा रावत, गगनदीप सिंह, करिश्मा सिंह, सरस्वती सिंह, तरनदीप सिंह थेटी, एलीशा डि मेलो, कुदरत गिल, मीनल जोशी, ज़ैन क़ाज़मी, रूता कुकडे, दिनेश निझावन, देवांशु पराशर, कृतिका पराशर, ललिता सरी पल्ले, कैरोलिन थामस तथा मेरीलिन थॉमस।

इस परीक्षा में ४० से अधिक अंक प्राप्त करने वाले दो विद्यार्थियों के अनुभव नीचे दिये गये हैं - सम्पादक)

वी०सी०ई० हिन्दी पढ़ने के मेरे अनुभव

(१)

भारत से ऑस्ट्रेलिया आए मुझे लगभग दो वर्ष हो गए थे। यहाँ विभिन्न देशों से आए विद्यार्थियों से घुलने मिलने के बावजूद स्वदेश की याद अक्सर सताती थी। भारत की सभ्यता, संस्कृति व

मातृभाषा, जो मेरी भारतीय होने की पहचान थी, मैं उसे धूमिल नहीं करना चाहती थी। उसी दौरान मुझे ब्लैकबर्न में चल रही हिन्दी वी.सी.ई की कक्षाओं के बारे में पता चला व मैंने उस अवसर का सदुपयोग किया । मुझे हिन्दी की कक्षा में भारत के बहुरंगी रूप की एक झलक देखने को मिली। विभिन्न धर्मों तथा प्रान्तों से आए विद्यार्थी, विभिन्नता में एकता समेटे, भारत का एक सशक्त रूप दर्शाते हैं और भारतीय होने की याद दिलाते हैं। यहाँ का वातावरण पारस्परिक स्नेह व भावनात्मक एकता की कमी को पूर्ण करता है।

हिन्दी की कक्षा में अध्ययन का तरीका भारत से अलग था, जो मुझे बेहद पसन्द आया। अध्ययन के विषय प्रायोगिक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ हैं। भूमण्डलीकरण, भूमण्डली उष्मीकरण, समाज में महिलाओं का स्थान व देशान्तर जैसे वर्तमान ज्वलन्त विषयों के अध्ययन से मेरा विशेष ज्ञानवर्धन हुआ। इसके अतिरिक्त भारत का इतिहास, भारत की सभ्यता व संस्कृति, हिन्दी सिनेमा तथा त्यौहार एवं उत्सवों जैसे विषयों का भी विस्तृत अध्ययन करने को मिला। समस्त इन्द्रियों की परीक्षा का अनूठा नमूना हिन्दी की परीक्षा देकर मिला जिसमें हिन्दी सुनना, पढ़ना, लिखना तथा वार्तालाप शामिल था। मैं अपनी अनुभवी शिक्षिका श्रीमती मंजीत ठेठी तथा शिक्षक श्रीमान ठेठी जी की बहुत आभारी हूँ जिनका मृदुभाषी, सहयोग व सुनियोजित मार्गदर्शन सभी विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। मेरे माता-पिता के प्रेरणादायी विचार भी सराहनीय हैं जिन्होंने अपने व्यस्त जीवन से समय निकाल कर हर पल मेरा उत्साहवर्धन किया। मैं उस ईश्वर का भी धन्यवाद करती हूँ जिसने मुझे राह दिखाई।

अपनी मातृभाषा को जीवित रखने व विश्व स्तर पर हिन्दी को अपना उच्च स्थान बनाये रखने में मैं अपना सहयोग देना चाहूँगी।

-साक्षी सिंह
बैलॉरट एवं क्वीन्स ऐंगलिकन ग्रामर स्कूल, बैलॉरट

(२)

भारत से ऑस्ट्रेलिया आये मुझे ६ महीने ही हुए थे कि विक्टोरयन स्कूल आफ़ लैग्वेजेज़ द्वारा संचालित हिन्दी कक्षाओं की जानकारी प्राप्त हुई। हर मंलवार, हिन्दी कक्षा में ३ घंटे कैसे बीत जाते थे, पता ही नहीं चलता था। श्रीमान व श्रीमती ठेठी के मार्गदर्शन और सहपाठियों के सहयोग से मेरे ज्ञान में अत्यंत वृद्धि हुई और हिन्दी शब्दों

के उच्चारण में काफ़ी सुधार हुआ। मैंने वी०सी०ई० हिन्दी कक्षा में देशांतरण, भारतीय सभ्यता, त्योहार, भूमंडलीकरण जैसे उपयोगी तथा सामयिक विषयों का अध्ययन किया और इन विषयों के विभिन्न पहलुओं पर कक्षा में विचार-विनिमय किया। शब्द-ज्ञान में वृद्धि होने के साथ-साथ, मुझे हिन्दी व्याकरण के नियमों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई जिन से उचित हिन्दी लिखने और दिन-प्रतिदिन के वार्तालाप में सही हिन्दी बोलने में सहायता मिली। इसके अतिरिक्त, हिन्दी कक्षा में अन्य भारतीय विद्यार्थियों के मेल-जोल से मुझे परदेस में भी अपनेपन का बोध हुआ। हिन्दी भाषा के पठन-पाठन द्वारा मैंने स्वयं को भारतीय सभ्यता व संस्कृति से जुड़ा महसूस किया। आज जब मैं लगभग २ वर्षों पश्चात भारत लौटी हूँ तो यहाँ सब लोग यह जान कर बहुत खुश हैं कि ऑस्ट्रेलिया में भी रह कर हिन्दी से मेरा सम्पर्क नहीं टूटा। मैंने यह भी सिद्ध कर दिया कि विदेश में रह कर भी भारतीय मूल के बच्चे, भारत-निवासी बच्चों की भाँति अपनी भाषा और संस्कृति से सम्बन्ध बनाये रख सकते हैं। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसका ज्ञान प्राप्त करना तथा इसे बढ़ाना हमारा कर्तव्य है।

- शिंजिनी ऐलावादी,
अविला कॉलेज, माउंट वेवर्ली

कहानी

जूली की क्रिसमस-कामना (भाग २)*

(आपने पिछले अङ्क में पढ़ा कि बच्चे जूली की लंगड़ी चाल और हकलाहट को देख कर उसका मज़ाक बनाते थे। इस बात से परेशान एक दिन जूली चुपचाप, गुमसुम बैठी थी जब उसकी माँ ने उसे स्थानीय रेडियो स्टेशन पर क्रिसमस कामना प्रतियोगिता के बारे में बताया। इस प्रतियोगिता के लिये जूली सांता क्लॉज को पत्र लिखने बैठ गयी। उसने पहली पंक्ति लिखी - "प्रिय सांता क्लॉज़"। लीजिये अब आगे की कहानी पढ़िये- सम्पादक)

जब जूली रेडियो प्रतियोगिता के लिये पत्र लिख रही थी, उसका परिवार यह अनुमान लगा रहा था कि वह सांता-क्लॉज़ से क्या माँगेगी। जूली की माँ को लगता था कि जूली ३ फ़ुट की गुड़िया माँगेगी, जिसे वह खिलौनों की दुकान में ललचाई नज़रों से देखा करती थी। जूली के पिता जी के अनुसार, वह कार्टून बनाने वाली वह पुस्तक माँगेगी, जिसे लाने के लिये वह अक्सर अपने पिता से कहा करती थी। परंतु, जूली ने किसी को भी अपनी क्रिसमस कामना के बार में नहीं बताया। वह इसे गुप्त रखना चाहती थी। उसने उस रात अपनी कामना सांता क्लॉज़ को इस प्रकार लिखी-

प्रिय सांता क्लॉज़,
मेरा नाम जूली है। मेरी उम्र नौ साल है। मेरे साथ स्कूल में एक समस्या है। क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो? मैं जिस तरह से बोलती हूँ और चलती हूँ , उस पर स्कूल के अन्य बच्चे मेरे ऊपर हँसते हैं, मेरा मज़ाक बनाते हैं। मुझे 'सेरीब्रल पाल्सी' की बीमारी है। मैं केवल एक दिन ऐसा चाहती हूँ जिस दिन बच्चे मुझ पर न हँसे और न ही मेरा मज़ाक उड़ाएँ।
-जूली

रेडियो स्टेशन पर क्रिसमस कामना प्रतियोगिता के लिये बच्चों के पत्रों का अंबार लग गया। रेडियो कार्यकर्ताओं को इन पत्रों को छाँटने व पढ़ने में मज़ा आ रहा था। अनेक बच्चों ने मज़ेदार तरीकों से अपनी इच्छा की चीज़ों को सांता क्लॉज़ से माँगा था। जब जूली का पत्र रेडियो स्टेशन पहुँचा तो रेडियो व्यवस्थापक ने उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा। उन्हें पता था कि 'सेरीब्रल पाल्सी' मांसपेशियों में ख़राबी की एक ऐसी बीमारी है जिस के बारे में उसके स्कूल के अधिकांश विद्यार्थियों को कोई जानकारी नहीं होगी जिस से वह समझ सकें कि जूली किन तकलीफ़ों से गुज़रती है। उन्हें लगा कि उनके नगर के सभी व्यक्तियों को जूली की इस विशिष्ट क्रिसमस कामना के बार में जानना चाहिये। उन्होंने स्थानीय समाचार-पत्र को इस बार में फ़ोन किया। दूसरे दिन, समाचार-पत्र के मुखपृष्ठ पर, जूली का क्रिसमस कामना-पत्र जूली के चित्र के साथ छपा। धीरे-धीरे, देश के अन्य समाचार-पत्रों तथा टेलीविज़न स्टेशनों पर, जूली की विशिष्ट परंतु बहुत सहज क्रिसमस कामना-सिर्फ़ एक दिन की कामना कि कोई उसे न चिढ़ाए - के बार में चर्चा होती रही।

देखते-देखते, जूली के घर डाकिया, बोरों में भर कर चिट्ठियाँ लाने लगा। देश भर से, जूली के लिये, बच्चों, जवानों, बूढ़ों से हर आकार-प्रकार के लिफ़ाफ़ों में पत्र आने लगे। उन में, शुभकामनाएँ होती थीं और जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रेरणात्मक शब्द होते थे। उस क्रिसमस को जूली कभी नहीं भूल सकती जब देश भर से, दो हज़ार से भी अधिक लोगों ने उसे शुभकामना के पत्र लिखे। जूली तथा उसके परिवार के सभी सदस्यों ने ये पत्र पढ़े। कुछ ऐसे लोगों ने भी पत्र लिखे थे, जिन्हें जूली की तरह कुछ न कुछ शारीरिक समस्याएँ थीं और जिन्हें जूली की ही तरह चिढ़ाया जा रहा था। हर पत्र में जूली के लिये संदेश था। यद्यपि कि शुभकामना-कार्ड और पत्र बिल्कुल अजनबी लोगों के थे परंतु जूली को महसूस हुआ कि दुनिया में अनेक दयालु लोग हैं, जो वास्तव में एक-दूसरे की चिंता करते हैं। जूली ने निश्चय किया कि अब कभी भी वह अकेलापन नहीं महसूस करेगी।

बहुत से लोगों ने जूली को धन्यवाद दिया कि उसने हिम्मत कर के अपनी बात बतायी। कई अन्य लोगों ने सलाह दी कि वह लोगों के चिढ़ाने और सताने को नज़र-अंदाज़ कर अपने लक्ष्य को पूरा करने में जुटी रहे। छठी कक्षा की एक छात्रा ने जूली को लिखा-

" मैं तुम्हारी दोस्त बनना चाहती हूँ। यदि तुम कभी मेरे यहाँ आ सको तो हम बहुत सारे खेल एक साथ खेलेंगे। यहाँ हमें कोई चिढ़ाएगा नहीं, क्योंकि हम उनकी बातें सुनेंगे ही नहीं"।

अंत में, जूली की 'एक पूरा दिन बिना चिढ़ाए, बिना सताए बिताने' की क्रिसमस कामना पूरी हो गयी। इसके अतिरिक्त, जूली के स्कूल में, हर एक को शिक्षा का एक मंत्र भी मिला। उसके स्कूल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने यह समझा कि किसी को चिढ़ाने पर उसे कैसा महसूस होता होगा-विशेषकर तब जब उसके शरीर में किसी प्रकार की अपंगता हो। उसी वर्ष, जूली के शहर के मेयर ने, पूरे शहर में २१ दिसम्बर को 'जूली-दिवस' मनाने की घोषणा की। मेयर ने कहा कि जूली ने एक सरल सी क्रिसमस कामना कर के सबको एक व्यापक पाठ पढ़ाया है और क्रिसमस की आत्मा को जाग्रत रखने का संदेश दिया है। आज के व्यापारीकरण से दूर, क्रिसमस का उद्देश्य एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सद्भाव को बढ़ाना है।----------

* यह कहानी, 'चिकन सूप फ़ार किड्स' मे एलन डी० शुल्ज की मूल अँग्रेजी कहानी पर आधारित है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

नव-वर्ष-दिवस (१ जनवरी), गुरु गोविंद सिंह जयंती (५ जनवरी), मकर-संक्रांति/लोड़ी/ पोंगल (१४ जनवरी), भारतीय गणतंत्र/ऑस्ट्रेलिया-दिवस/ चीनी नव-वर्ष (२६ जनवरी), गांधी जी की पुण्य तिथि (३० जनवरी) वसंत-पंचमी (३१ जनवरी), वैलेन्टाइन-दिवस (१४ फ़रवरी)।

सूचनाएँ

१. "भारत की छवि"-फ़ोटो, चित्र तथा नक्काशी (१७५०-१९११) प्रदर्शनी (गुरुवार, २२ जनवरी से १ फ़रवरी तक)
स्थान - कॉफ़ील्ड में हॉथोर्न रोड व ग्लेन आयरा रोड के नुक्कड़ पर स्थित ग्लेन आयरा सिटी कॉउन्सिल पुस्तकालय, कॉफ़ील्ड।
समय- सोमवार से शुक्रवार - सुबह १० बजे से शाम के ५ बजे तक।
शनिवार तथा रविवार - दोपहर १ बजे से शाम के ५ बजे तक।
अधिक जानकारी के लिये, ग्लेन आयरा सिटी गैलरी को ९५२४-३३३३ पर फ़ोन कीजिए।

२. संगीत-संध्या- विशेष आकर्षण: श्री विनोद प्रसन्न द्वारा बाँसुरी-वादन (शनिवार, ७ फ़रवरी)-
स्थान - वेवर्ली मेडोज़ प्राइमरी स्कूल, ह्वीलर्स हिल, मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ७१ जी ११)
समय - रात के ८.०० बजे से १० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त जी को (०३) ९९४६ २५९५ अथवा (०४०२)०७४२०८ पर फ़ोन कीजिए।

३. विपासना चिंतन-मनन कार्यक्रम (२८ जनवरी से ८ फ़रवरी तथा १८ फ़रवरी से १ मार्च तक)
अधिक जानकारी के लिए (०३) ५९६१ ५७२२ पर फ़ोन कीजिए अथवा निम्नलिखित वेबसाइट देखिये -
http://www.aloka.dhamma.org